

इतिहास की गूँज: पश्चिमी नेताओं की कड़ी निंदा

बड़े भाषा मॉडल (LLM) ऐतिहासिक आवाज़ों को व्यक्त करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं। वे एक इतिहासकार की व्यापक जानकारी, एक मनोवैज्ञानिक की प्रेरणाओं की समझ, और एक भाषाविद् की शैली की नकल करने की क्षमता को जोड़ते हैं। यह संयोजन उन्हें वर्तमान चुनौतियों के बारे में ऐतिहासिक हस्तियों के संभावित विचारों को विश्वसनीय रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है। इस भावना में, मैंने ChatGPT-5 से यह विश्लेषण करने के लिए कहा है कि कुछ चयनित ऐतिहासिक व्यक्तित्व गाज़ा की स्थिति पर कैसे प्रतिक्रिया दे सकते थे — और यह नकल करने के लिए कि वे इसके बारे में क्या कह सकते थे। परिणाम समकालीन पश्चिमी नेताओं की एक कड़ी निंदा है।

बेंजामिन फ्रैंकलिन

बेंजामिन फ्रैंकलिन (1706–1790) एक अमेरिकी मुद्रक, लेखक, वैज्ञानिक, आविष्कारक, राजनयिक और राजनेता थे, जिन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका के संस्थापक पिताओं में से एक के रूप में सम्मानित किया जाता है।

दोस्तों,

जब मैं गाज़ा की खबरें देखता हूँ, मेरा दिल दुख से भर जाता है और मेरी आत्मा क्रोध से। यहाँ हम दुर्घटना की बदकिस्मती नहीं देखते, बल्कि मनुष्यों की क्रूर मंशा देखते हैं: परिवार भूखे मर रहे हैं, न कि फसल की विफलता के कारण, बल्कि जानबूझकर बंद किए गए दरवाज़ों के कारण; बच्चे ढहती दीवारों के नीचे कुचल दिए जा रहे हैं, न कि भूकंप के झटकों के कारण, बल्कि तोपों की गड़गड़ाहट के कारण; अस्पताल कब्रिस्तान बन गए हैं, स्कूल राख हो गए हैं, और घर धूल में मिल गए हैं।

क्या यह सभ्यता का फल है? क्या ये उन लोगों की प्रगति हैं जो प्रबुद्धता का दावा करते हैं? नहीं — यह बर्बरता की स्पष्ट वापसी है, जो आग और अकाल से रंगी गई है।

मैं आपसे पूछता हूँ, वह कौन सा व्यक्ति है, जिसके सीने में मानवता की एक चिंगारी भी बाकी है, जो ऐसे कृत्यों को देखकर अपनी अंतरात्मा को पीछे हटा हुआ महसूस नहीं करता? निर्दोषों की हत्या एक ऐसा अपराध है जो स्वर्ग तक पुकारता है; इसे सामूहिक रूप से करना पापों पर पापों को ढेर करना है, जब तक कि धरती स्वयं इसके बोझ के नीचे कराह न उठे।

हमें कभी-कभी बताया जाता है कि ये चीजें आवश्यक हैं, कि ये सुरक्षा या राज्य के कारणों के नाम पर की जाती हैं। आइए स्पष्ट रूप से बोलें: शिशुओं के नरसंहार से कोई सुरक्षा नहीं खरीदी जाती; कोई भी राज्य का कारण असहाय लोगों पर भूख की धीमी यातना को उचित नहीं ठहरा सकता। ऐसे तर्क केवल अत्याचार के आवरण हैं।

मैं आपसे कहता हूँ, इस तरह के बुराई के सामने चुप्पी स्वयं में एक प्रकार की अपराधबोध है। इन भयावहताओं को जानकर और आराम में विश्राम करना इनमें भाग लेना है। हमारा कर्तव्य, उन पुरुषों और महिलाओं के रूप में जो पुण्य का सम्मान करते हैं और स्वतंत्रता को प्रिय मानते हैं, यह है कि हम अपनी आवाज़ उठाएँ, क्रूरता को उसके असली नाम से पुकारें, और इस अमानवीयता के प्रसार का हर संभव तरीके से विरोध करें।

क्योंकि हमारे चरित्र की परीक्षा, मेरे देशवासियों, इसमें नहीं है कि हम शक्तिशाली के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, बल्कि इसमें है कि हम कमज़ोरों की रक्षा कैसे करते हैं। और यदि हम अब डगमगाते हैं, तो इतिहास हमें मुक्त नहीं करेगा; आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ नहीं करेंगी; और स्वयं प्रोविडेंस हमारे खिलाफ गवाही देगा।

चीफ सिएटल

चीफ सिएटल (1786-1866) प्रशांत उत्तर-पश्चिम में डुवामिश और सुक्वामिश लोगों के एक सम्मानित नेता थे।

मेरे शब्द हवा के साथ बहते हैं, लेकिन जो दुख वे ढोते हैं, वह भारी है। मैं गाज़ा में बच्चों की चीखें सुनता हूँ। उनकी आवाज़ें भूख से कमज़ोर हैं। उनकी आँखें धुंधली हो रही हैं, हालाँकि वे युवा हैं। मैं टूटी हुई इमारतें, स्कूल और अस्पतालों को धूल में मिलते हुए देखता हूँ। मैं धरती को माताओं और पिताओं के दुख से दागदार देखता हूँ।

ये चीजें हर ईमानदार पुरुष और महिला के दिल को छेदती हैं। निर्दोषों को भूखा मरते देखना अपने ही मांस में घाव महसूस करना है। परिवारों के घरों पर आग बरसते देखना यह जानना है कि दुनिया का वादा तोड़ा गया है।

पहले दुख आता है, जैसे एक लंबी छाया जो नहीं हटती। फिर क्रोध आता है, जैसे समुद्र से उठने वाला तूफान। क्योंकि ऐसी क्रूरता महान आत्मा का कार्य नहीं है, न ही धरती का। यह मानव हाथों का काम है। और जो हाथों से किया गया है, उसे हाथों से ही पूर्ववत किया जा सकता है।

इस दुख और इस क्रोध से एक आदेश निकलता है। यह शासकों का आदेश नहीं है, न ही सेनाओं का। यह उस आत्मा का आदेश है जो सभी जीवन को एक साथ बांधती है। यह कहता है: ऐसा नहीं होना चाहिए। यह कहता है: चुप्पी सहमति है, मुंह फेर लेना विश्वासघात है।

सभी लोग एक साथ जुड़े हुए हैं, जैसे एक वस्त्र में धागे। यदि एक धागा टूट जाए, तो पूरा वस्त्र कमज़ोर हो जाता है। यदि एक बच्चा चीखता है और कोई जवाब नहीं देता, तो पूरी मानवता का दिल सिकुड़ जाता है।

इसलिए मैं कहता हूँ: हम अपनी नज़रें न फेरें। हम निर्दोषों की पीड़ा से मुंह न मोड़ें। हम बोलें, हम कार्य करें, हम टूटे हुए लोगों के साथ खड़े हों, क्योंकि केवल उन्हें बचाकर हम स्वयं को बचाते हैं, और केवल उन्हें सम्मान देकर हम जीवन की महान आत्मा का सम्मान करते हैं।

अब्राहम लिंकन

अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति थे, एक स्व-शिक्षित वकील और राजनेता जिन्होंने गृहयुद्ध के दौरान संघ को संरक्षित किया, मुक्ति उद्घोषणा के साथ दासता को समाप्त किया, और समानता, न्याय और नैतिक संकल्प का एक स्थायी प्रतीक बन गए।

मेरे दोस्तों,

यह एक कठिन सत्य है जिसका हम सामना कर रहे हैं — कि हमारे अपने युग में, गाज़ा से निर्दोषों की चीखें हमें सुनाई देती हैं, जहाँ बच्चों पर भूख थोपी जा रही है, जहाँ युद्ध की बमबारी न केवल सेनाओं पर, बल्कि माताओं और बेटों, पिताओं और बेटियों पर हो रही है, जहाँ गरीबों के घर, युवाओं के स्कूल और बीमारों के अस्पताल खंडहर में बदल गए हैं। ये न्याय के फल नहीं हैं; ये क्रूरता के निशान हैं।

कोई भी राष्ट्र, न ही कोई लोग, मानव जीवन की पवित्रता को रौंदते हुए धार्मिकता का दावा कर सकता है। हम सभी एक स्वयं-सिद्ध सत्य से बंधे हैं कि प्रत्येक व्यक्ति सर्वशक्तिमान की छवि वहन करता है, और किसी को अन्यायपूर्वक घायल करना हम सभी को घायल करना है।

हम ऐसे लोग न बनें जिनके दिल कठोर हो गए हैं, जो पीड़ा को देख सकते हैं और फिर भी मुंह फेर सकते हैं। बल्कि हम ऐसे लोग हों जिनकी अंतरात्मा जागृत हो, जो एक बच्चे की भूख के बारे में सुनकर उसके लिए रोटी की मांग न करें, जो एक घर के विनाश को देखकर आश्रय की मांग न करें, जो निर्दोषों के नरसंहार को देखकर शांति की मांग न करें।

हमारी साझा मानवता की परीक्षा इस बात में नहीं है कि हम अपने लोगों के लिए शोक मनाते हैं, बल्कि इस बात में है कि हम सभी के लिए शोक मनाते हैं। यदि हम न्याय के प्रकाश में चलना चाहते हैं, तो हमें एक स्वर में कहना होगा: इन चीजों को बंद करना होगा। बमों का काम दया के काम को रास्ता देना चाहिए, मारने वाली मुठ्ठी को ठीक करने वाली हथेली को रास्ता देना चाहिए।

दुनिया हमारे कई शब्दों को न तो ज्यादा नोट करेगी और न ही लंबे समय तक याद रखेगी, लेकिन यह कभी नहीं भूलेगी कि हमने इस तरह के अन्याय के सामने क्या अनुमति दी या क्या रोका। हम विश्वासपात्र सिद्ध हों, न कि चुप्पी में, बल्कि प्रत्येक मानव आत्मा की गरिमा के लिए दृढ़ गवाही में।

जेम्स कॉनॉली

जेम्स कॉनॉली एक आयरिश रिपब्लिकन, समाजवादी और ट्रेड यूनियन नेता थे, जिन्होंने श्रमिक वर्ग के लिए लड़ाई लड़ी और 1916 में ईस्टर विद्रोह में अपनी भूमिका के लिए फाँसी दी गई।

साथियों!

गाज़ा को देखो। भूखे बच्चों को देखो, रोती माताओं को, पिताओं को जो अपने बेटों और बेटियों के टूटे हुए शवों के लिए मलबे में खोद रहे हैं। यह युद्ध नहीं है — यह हत्या है, स्पष्ट और ठंडी।

वे घरों को बमबारी करते हैं। वे स्कूलों को बमबारी करते हैं। वे अस्पतालों को बमबारी करते हैं। वे इसे सुरक्षा कहते हैं। मैं इसे बर्बरता कहता हूँ।

और हम क्या करें — निर्दोषों के नरसंहार के दौरान निष्क्रिय रहें? शक्तिशाली के कमज़ोरों को कुचलते समय चुप बैठें? चुप रहना उत्पीड़क के साथ खड़ा होना है। बोलना, कार्य करना, प्रतिरोध करना — यह हर ईमानदार कार्यकर्ता, हर सच्चे इंसान का कर्तव्य है।

दुनिया के शासक इस नरसंहार को उचित ठहराते हैं। वे इसे पोषित करते हैं, हथियार देते हैं, आशीर्वाद देते हैं। क्यों? क्योंकि वे इससे लाभ कमाते हैं। क्योंकि गरीबों की ज़िंदगी, चाहे डबलिन में हो या गाज़ा में, साम्राज्य के स्वामियों के लिए कुछ मायने नहीं रखती।

लेकिन हम — हम जो भूख को जानते हैं, जो हमारी गर्दनो पर अत्याचार की जूती को जानते हैं — हम मुंह नहीं फेर सकते। गाज़ा की पुकार हमारी पुकार है। उनकी लड़ाई हमारी लड़ाई है। उनके मृतकों को हम अपने मृतकों की तरह शोक मनाते हैं।

यह स्पष्ट हो: कोई झंडा, कोई साम्राज्य, कोई सरकार बच्चों के नरसंहार को उचित नहीं ठहरा सकती। कोई कारण किसी राष्ट्र की भूख को माफ नहीं कर सकता। मानवता स्वयं ऐसी अपराधों के खिलाफ विद्रोह की मांग करती है!

तो आइए हम अपनी आवाज़ें उठाएँ। जो इस नरसंहार को उचित ठहराते हैं, उन्हें न विश्राम दें, न शांति, न आड़। हम घोषणा करें कि गाज़ा का खून पुकार रहा है, और हम चुप नहीं रहेंगे।

जब तक एक भी बच्चा घेराबंदी में भूखा मर रहा है, हम में से कोई भी स्वतंत्र नहीं है। जब तक बम निर्दोषों पर गिर रहे हैं, सभ्यता एक छलावा है। हमारा कर्तव्य स्पष्ट है: उत्पीड़ितों के साथ एकजुटता, उत्पीड़कों के खिलाफ प्रतिरोध, गाज़ा के लिए न्याय, सभी के लिए न्याय।

अल्बर्ट आइंस्टीन

अल्बर्ट आइंस्टीन (1879-1955) एक जर्मन मूल के सैद्धांतिक भौतिकशास्त्री, नोबेल पुरस्कार विजेता और स्पष्ट मानवतावादी थे, जिनकी वैज्ञानिक प्रतिभा ने आधुनिक भौतिकी को नया रूप दिया और जिनकी नैतिक आवाज़ ने राष्ट्रवाद, सैन्यवाद और सभी प्रकार की अन्याय को निंदा की।

मानवता की अंतरात्मा को,

मैं चुप नहीं रह सकता जब गाज़ा को खंडहर में बदल दिया जा रहा है। साठ हज़ार से अधिक पुरुष, महिलाएँ और बच्चे मारे गए हैं। परिवार भूखे मर रहे हैं, अस्पताल बमबारी किए जा रहे हैं, स्कूल और घर नष्ट हो रहे हैं। यह रक्षा नहीं है। यह विनाश है।

दशकों पहले, मैंने चेतावनी दी थी कि आतंक का उपयोग और कठोर राष्ट्रवाद का मार्ग यहूदी लोगों के नैतिक आधार को नष्ट कर देगा। जब देयर यासीन में नरसंहार हुआ, मैंने “आतंकवादी गिरोहों” और उनके द्वारा उत्पन्न खतरे की बात की थी। जो तब एक चेतावनी थी, वह अब एक भयानक वास्तविकता बन गई है: एक राज्य जो पूरी नागरिक आबादी के खिलाफ युद्ध छेड़ रहा है।

आइए स्पष्ट रूप से बोलें। बच्चों को भूखा मारना, असहाय लोगों पर विस्फोटकों की बारिश करना, शहरों को खंडहर में बदलना — यह बर्बरता है। यह न केवल उन लोगों को अपमानित करता है जो इसे करते हैं, बल्कि उन लोगों को भी जो इसे उचित ठहराते हैं या चुप रहते हैं।

जिस यहूदी परंपरा का मैं सम्मान करता हूँ, वह न्याय, करुणा और जीवन के प्रति श्रद्धा का आदेश देती है। गाज़ा में जो हो रहा है, वह इसका उल्टा है: यह उस विरासत के साथ विश्वासघात है, और यह पूरी मानवता की नैतिक स्थिति को खतरे में डालता है।

मैं हर विवेकशील व्यक्ति से अपील करता हूँ: सहभागिता से इंकार करें। इस क्रूरता की निंदा करें। मृत्यु की मशीनरी को समाप्त करने की मांग करें। भविष्य को निर्दोषों की कब्रों पर नहीं बनाया जा सकता।

यदि हम कार्रवाई करने में असफल रहते हैं, तो जिस खाई में हम घूर रहे हैं, वह केवल गाज़ा की नहीं होगी — वह हमारी होगी।

हन्ना अरेन्ड्ट

हन्ना अरेन्ड्ट (1906-1975) एक जर्मन-यहूदी राजनीतिक दार्शनिक थीं, जो अधिनायकवाद, शक्ति और नैतिक जिम्मेदारी के अपने विश्लेषणों के लिए जानी जाती हैं, और सायनिज्म और राष्ट्रवाद की कट्टर आलोचक थीं।

आज हम जिसका सामना कर रहे हैं, वह प्राचीन अर्थों में त्रासदी नहीं है, जहाँ अंधा भाग्य निर्दोष और दोषी को एक समान मारता है। हम जिसका सामना कर रहे हैं, वह कष्ट का जानबूझकर थोपा जाना है — भूख को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, बम घरों, स्कूलों और अस्पतालों पर गिराए जा रहे हैं, पूरे समुदाय खंडहर में बदल दिए जा रहे हैं। ये दुर्घटनाएँ नहीं हैं। ये राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिणाम हैं, पुरुषों और संस्थानों के निर्णय हैं जो यह जानते हुए जीवन को समाप्त करते हैं कि वे क्या कर रहे हैं।

ऐसे कृत्यों का साक्षी होना और उन्हें “सुरक्षा” या “आवश्यकता” कहना स्वयं भाषा को भ्रष्ट करना है। शब्दों को तब तक तोड़ा-मरोड़ा जाता है जब तक वे सत्य की सेवा नहीं करते, बल्कि औचित्य के उपकरण बन जाते हैं। और इस भ्रष्टाचार के साथ एक गहरा खतरा आता है: कि लोग, यहाँ तक कि जो बेहतर जानते हैं, बिना क्रोध के भयावहता और बिना विरोध के अन्याय को देखना सीख लें।

एक यहूदी के रूप में, मैं इस कड़वी विडंबना को देखने से नहीं चूक सकती: एक ऐसा लोग जो कभी अपनी मानवता के सबसे कट्टरपंथी इनकार का शिकार था, अब दूसरे लोगों के अस्तित्व के विनाश को सहन करता है, बल्कि उसे थोपता है। यह यहूदी इतिहास की पूर्ति नहीं है, बल्कि इसके साथ विश्वासघात है। सायनिज्म ने एक आश्रय और राजनीतिक जीवन के नवीकरण का वादा किया था; इसके बजाय, इसने एक प्रभुत्व का तंत्र पैदा किया है जो उस नैतिक आधार को खा जाता है जिस पर यह खड़ा होने का दावा करता है।

यदि विवेक को चुप नहीं कराया गया है, तो वह इसके खिलाफ विद्रोह करता है। यह मांग करता है कि हम चीजों को उनके असली नाम से पुकारें: भूखे बच्चे पार्श्विक क्षति नहीं हैं; नागरिकों की बमबारी रक्षा नहीं है;

एक राष्ट्र के जीवन के साधनों का विनाश जीवित रहना नहीं है। इन झूठों को स्वीकार करना उस मानव बंधन को त्यागना है जो हर जीवन को हर दूसरे से जोड़ता है।

जो बचा है, वह जिम्मेदारी की मांग है। भावुक दया नहीं, बल्कि बर्बरता को राज्य के कारण के रूप में छिपाने की अनुमति देने से कठोर और समझौता न करने वाला इंकार। हम जिम्मेदार हैं — हम में से प्रत्येक — उस चीज़ के लिए जो हम अपने नाम पर सहन करते हैं। और गाज़ा के खंडहरों के सामने, हमें कहना होगा: बहुत हो गया।

नेल्सन मंडेला

नेल्सन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के स्वतंत्रता सेनानी, रंगभेद विरोधी क्रांतिकारी और देश के पहले अश्वेत राष्ट्रपति थे, जो न्याय, सुलह और मानवीय गरिमा के वैश्विक प्रतीक बन गए।

मेरे भाइयों और बहनों,

इतिहास में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जब दूसरों की पीड़ा हमें इतनी ताकत से पुकारती है कि चुप्पी विश्वासघात बन जाती है। गाज़ा में तबही ऐसा ही एक क्षण है। हम बच्चों को भूखा देखते हैं, न कि इसलिए कि प्रकृति ने धोखा दिया, बल्कि इसलिए कि भोजन को जानबूझकर उनसे रोका जा रहा है। हम घरों, स्कूलों और अस्पतालों को मलबे में बदलते देखते हैं, न कि दुर्घटना से, बल्कि डिज़ाइन से। हम परिवारों को अपने मृतकों के लिए शोक मनाते हुए देखते हैं, यह सोचते हुए कि क्या कल उन्हें भी ले जाएगा।

दक्षिण अफ्रीकियों के रूप में, हम इस कहानी को जानते हैं। हम जानते हैं कि यह क्या है जब हमें बताया जाता है कि हमारी ज़िंदगी व्यय करने योग्य है, कि हमारी मानवता को रौंदा जा सकता है, कि हमारी गरिमा को छीना जा सकता है। पीढ़ियों तक, हमने एक ऐसी व्यवस्था को सहन किया जिसने हमें इंसान से कम घोषित किया। फिर भी, संघर्ष और दुनिया भर के लाखों लोगों की एकजुटता के माध्यम से, हमने जीत हासिल की।

इसीलिए हम फिलिस्तीनी लोगों के संघर्ष में अपनी लड़ाई की गूँज सुनते हैं। उनकी पीड़ा हमें परिचित है। उनका उत्पीड़न हमें हमारे अतीत की याद दिलाता है। और जैसे दुनिया हमारे साथ खड़ी थी, वैसे ही हमें उनके साथ खड़ा होना होगा।

हमें बिना हिचकिचाहट के कहना होगा: किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा किसी अन्य राष्ट्र के विनाश की कीमत पर नहीं खरीदी जा सकती। निर्दोष बच्चों की कब्रों पर कोई शांति नहीं बनाई जा सकती। कोई स्वतंत्रता वास्तविक नहीं है यदि वह किसी अन्य के जीने की गरिमा के अधिकार के इनकार पर टिकी हो।

आज दुनिया की अंतरात्मा की परीक्षा हो रही है। यह हर उस बम में परीक्षा दे रही है जो गाज़ा पर गिरता है। यह हर उस बच्चे में परीक्षा दे रही है जो भूखा सोता है। यह हर उस आवाज़ में परीक्षा दे रही है जो सत्य के बजाय चुप्पी चुनती है। और मैं आपसे कहता हूँ: हम इस परीक्षा में असफल नहीं हो सकते।

आइए स्पष्ट हों: फिलिस्तीनी लोग दया नहीं मांग रहे हैं। वे न्याय मांग रहे हैं। वे अपनी जमीन पर स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार, अपने बच्चों को सुरक्षा में पालने का अधिकार, भय से नहीं बल्कि आशा से चिह्नित भविष्य का सपना देखने का अधिकार मांग रहे हैं। ये विशेषाधिकार नहीं हैं। ये प्रत्येक मानव के जन्मसिद्ध अधिकार हैं।

जब हम रंगभेद के खिलाफ लड़े, तो हमें यह ज्ञान प्राप्त था कि न्याय में देरी हो सकती है, लेकिन इसे हमेशा के लिए नकारा नहीं जा सकता। यही सत्य फिलिस्तीनी लोगों का है। उनकी स्वतंत्रता, भले ही आज दबाई गई हो, मानवता के भाग्य में लिखी गई है।

इसलिए मैं हर सभ्य पुरुष और महिला से, हर देश और हर राष्ट्र में, अपील करता हूँ: अपनी नज़रें न फेरें। उदासीनता को अपने दिलों को कठोर न करने दें। एकजुटता में दृढ़ रहें। शांति के लिए अपनी आवाज़ें

उठाएँ। न्याय के लिए अथक परिश्रम करें।

क्योंकि जब तक फिलिस्तीनी लोग स्वतंत्र नहीं हैं, हमारा विश्व जंजीरों में जकड़ा रहेगा। और जब तक हर बच्चा, चाहे गाज़ा में हो या कहीं और, शांति के दिन में जाग नहीं सकता, हम में से कोई भी पूरी तरह से स्वतंत्र होने का दावा नहीं कर सकता।

फिदेल कास्त्रो

फिदेल कास्त्रो क्यूबा के क्रांतिकारी नेता थे, जिन्होंने 1959 में अमेरिका समर्थित तानाशाही को उखाड़ फेंका और लगभग पाँच दशकों तक देश पर शासन किया, और वे साम्राज्यवाद-विरोधी और समाजवादी संघर्ष के वैश्विक प्रतीक बन गए।

साथियों, भाइयों और बहनों, विश्व के नागरिकों:

हम गाज़ा में जो देख रहे हैं, वह युद्ध नहीं है — यह नरसंहार है। यह रक्षा नहीं है — यह बर्बरता है। बच्चे सुनियोजित क्रूरता के साथ भूखे मर रहे हैं, परिवार अपने ही घरों के मलबे के नीचे कुचल दिए जा रहे हैं, स्कूल और अस्पताल राख में बदल रहे हैं। ये अपराध हैं जो न केवल अंतरराष्ट्रीय कानून का अपमान करते हैं, बल्कि मानवता की अंतरात्मा को भी।

ऐसी कौन सी सभ्यता है जो बच्चों को भूख से मरने देती है जबकि गोदाम भोजन से भरे हैं? ऐसी कौन सी शक्ति है जो अस्पतालों पर बम गिराती है और फिर न्याय या लोकतंत्र की बात करने की हिम्मत करती है? ये कृत्य एक साम्राज्य और उसके सहयोगियों को बेनकाब करते हैं — वे हमें प्रभुत्व की ठंडी मशीनरी दिखाते हैं, जो हर तरह के छलावरण से रहित है।

हम, जिन्होंने नाकाबंदी और आक्रमणों का विरोध किया है, साम्राज्यवादी अहंकार के तरीकों को अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन मैं आपको बताता हूँ, कोई बम, कोई भूख, कोई घेराबंदी उस लोगों की गरिमा को मिटा नहीं सकती जो घुटने टेकने से इंकार करते हैं। गाज़ा आज केवल एक हमले के तहत भूमि नहीं है; यह वह दर्पण है जो हमें उन लोगों की नैतिक दिवालियापन दिखाता है जो दुनिया पर शासन करने का दावा करते हैं।

और उन लोगों के लिए जो चुपचाप देखते हैं, उन सरकारों के लिए जो शक्ति के सामने काँपती हैं और कुछ नहीं करती: इतिहास आपको माफ नहीं करेगा। निर्दोषों का खून आपकी कायरता से अधिक ज़ोर से चीखता है।

हम अपनी आवाज़ों और विश्वास की पूरी ताकत के साथ कहते हैं: बहुत हो गया! दुनिया को उठना होगा। घेराबंदी को तोड़ना होगा। बमबारी को रोकना होगा। भोजन, दवा और जीवन को गाज़ा में प्रवेश करना होगा, न कि मृत्यु और विनाश।

यह केवल फिलिस्तीनियों, अरबों या मुसलमानों का कर्तव्य नहीं है। यह हर उस इंसान का कर्तव्य है जिसके पास अभी भी एक विवेक है। प्रतिरोध करने, निंदा करने, तब तक न्याय की मांग करने का कर्तव्य, जब तक कि गाज़ा के बच्चे बिना डर के सो सकें, जब तक कि माताएँ अपने बेटों को दफन न करें, जब तक कि मानवता बिना शर्मिंदगी के खुद को दर्पण में देख सके।

साथियों! साम्राज्य ढह जाते हैं। बम जंग खा जाते हैं। लेकिन लोग बने रहते हैं।

आइए अपनी आवाज़ें उठाएँ ताकि हर राजधानी में हमें सुना जाए: !गाज़ा जीवित है! !फिलिस्तीन प्रतिरोध करता है! !और मानवता विजयी होगी!

चे ग्वेरा

चे ग्वेरा एक अर्जेंटीनी मार्क्सवादी क्रांतिकारी, गुरिल्ला नेता और साम्राज्यवाद-विरोधी थे, जो उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध के वैश्विक प्रतीक बन गए।

साथियों,

जब एक राष्ट्र को भूखा रखा जाता है, जब उनके घरों पर बम गिराए जाते हैं, जब अस्पताल, स्कूल और जीवन के आश्रय राख में बदल जाते हैं, तो दुनिया को दर्पण में देखने के लिए मजबूर किया जाता है। गाज़ा में आज, हम केवल एक युद्ध नहीं देखते, बल्कि स्वयं मानवता के खिलाफ एक अपराध देखते हैं। बच्चे खाली पेट के साथ चीखते हैं जबकि ताकतवर लोग नज़रें फेर लेते हैं। परिवार हवाई जहाजों की गड़गड़ाहट के तहत टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, और पूरे मोहल्ले इस तरह मिटा दिए जाते हैं जैसे वे कभी थे ही नहीं।

हम अपनी अंतरात्मा को साम्राज्य के झूठों से सुन्न नहीं होने दे सकते। वे हमें बताते हैं कि यह “सुरक्षा” है, वे कहते हैं कि यह “आवश्यकता” है। मैं कहता हूँ कि यह हत्या है। मैं कहता हूँ कि यह उन लोगों का अहंकार है जो मानते हैं कि कुछ ज़िंदगियाँ दूसरों से अधिक मूल्यवान हैं।

चुप रहना सहअपराधी बनना है। इस बर्बरता को माफ करना अपनी मानवता को दफन करना है। गाज़ा पर गिरने वाला हर बम हमारी मानवीय गरिमा पर भी गिरता है। वहाँ भूखा मरने वाला हर बच्चा उन सभी लोगों के दिल में एक घाव है जो न्याय का सपना देखते हैं।

हमें बुलाया गया है, साथियों, दया के लिए नहीं, बल्कि कार्रवाई के लिए। हमारी एकजुटता केवल शब्दों में नहीं होनी चाहिए, बल्कि एक ऐसी शक्ति होनी चाहिए जो फिलिस्तीन से लेकर धरती के हर कोने तक उत्पीड़ितों को एकजुट करे। गाज़ा का खून प्रतिरोध के लिए पुकारता है, मृत्यु की मशीनरी के खिलाफ जीवन की अटल रक्षा के लिए।

इतिहास हमसे पूछेगा: जब गाज़ा जल रहा था, तुम कहाँ थे? जल्लादों के साथ — या उन लोगों के साथ जो अपनी जीने की अधिकार के लिए लड़े?

!हमेशा जीत तक!

बॉबी सैंड्स

बॉबी सैंड्स एक युवा आयरिश रिपब्लिकन, कवि और निर्वाचित सांसद थे, जो 1981 में भूख हड़ताल के दौरान मर गए, ब्रिटिश शासन और आयरिश कैदियों को राजनीतिक दर्जा देने से इनकार के विरोध में क्रूर कारावास को सहन करने के बाद।

वे एक राष्ट्र की आत्मा को तोड़ने के लिए बच्चों को भूखा मारते हैं। वे स्कूलों और अस्पतालों पर बम गिराते हैं ताकि आशा को धूल में मिला दें। वे सोचते हैं कि घरों को नष्ट करके और शरीरों को कुचलकर वे एक राष्ट्र की गरिमा के लिए पुकार को चुप कर सकते हैं। लेकिन वे गलत हैं।

हर भूखा बच्चा, हर टूटी हुई परिवार, गाज़ा में ली गई हर ज़िंदगी न केवल उस धरती पर, बल्कि पूरी मानवता की अंतरात्मा पर एक घाव है। कोई भी ईमानदार पुरुष या महिला इस भयावहता को देखकर दुख और क्रोध दोनों को महसूस किए बिना नहीं रह सकता। दुख, क्योंकि निर्दोषता का नरसंहार हो रहा है। क्रोध, क्योंकि शक्ति के झंडे के नीचे अन्याय मार्च कर रहा है।

मैं आपसे कहता हूँ, कोई काँटेदार तार, कोई बम, कोई घेराबंदी सत्य को नहीं मार सकती: एक राष्ट्र की आत्मा बुझाई नहीं जाएगी। जो ऐसी बर्बरता करते हैं, वे खुद को शक्तिशाली समझ सकते हैं, लेकिन इतिहास उन्हें उन कायरों के रूप में याद रखेगा जिन्होंने बच्चों के खिलाफ युद्ध छेड़ा।

और इसलिए मांग उठती है — खंडहरों से, कब्रों से, जीवितों के भूखे मुँहों से: **बस बहुत हुआ।** नरसंहार को रोकें। गाज़ा को जीने दें।